स. ग्रो.वि./हिसार/44-83/8451.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज इण्डियन फारमर्ज फर्टीलाईजरज़ को-ग्राप्रेटिव लि०, 34, नेहरु प्लैस नई दिल्ली, हिसार, व चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री ग्रोम प्रकाश तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई निकामों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 निकासर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिष्टिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त वा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ना स्थित हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित भामला है:—

क्या श्री ग्रोम प्रकाश की सेवाग्रों का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ।

सं श्रो.वि./श्रम्वाला/329-83/8460.—चूंकि हिरयाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिरयाणा राज्य परिवहन, कैयल, के श्रमिक श्री हरनेक सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित गामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है । ग्रीर चूंकि हिरयाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना यांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, भ्रब, भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान गई की सिन्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी धिस्त्वना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निद्धित करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अय वा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री हरनेक सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

मं. ग्रो. वि./हिसार/128-83/8466.—-चूंकि हरियाण् के राज्यपास की राय है कि मै. हिसार टैक्सटाईल मिल्ज, हिसार, के श्रीमक श्री राम सुख तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीबोगिक विवाद है; ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना थोडनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ. (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम-की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्थय हेतु निविद्ध करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त₁विवाद से सुसंगत या सम्बान्धत मामला है:——

क्या श्री राम सुख की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि/िमवानी/153-83/8473 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी हरियाणा हथकरघा बुनकर क्षीघ्न सहकारी समिति सीमित इन्डस्ट्रीयल, एरिया, पानीपत, के श्रमिक श्री एस.पी. जिन्दल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यभाल इसके द्वारा सरकारी श्रिविस्त्रना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिविस्त्रना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिविनियम की धारा 7 के श्रीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री एस पी जिन्दल की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकवार है ?